सूरह — एक कहानी

सूरह अल-वाक़ि'आ

होने वाला वाक़िआ

पूरा सफ़र — तीन अंजाम बे-नक़ाब —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 56 • 96 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़ा वक़-'अतिल्-वाक़ि'अह। लैस लि-वक़्'अतिहा काज़िबह
1-2. जब वो होने वाला (वाक़िआ) हो जाएगा, उसके होने को कोई झुठला न सकेगा।

ख़ाफ़िज़तुर्-राफ़ि'अह
3. वो पस्ती में गिराने वाला, बुलंदी पर उठाने वाला होगा।

वस्-साबिक़ूनस्-साबिक़ून। उलाइकल्-मुक़र्रबून
10-11. और आगे बढ़ने वाले तो आगे बढ़ने वाले ही हैं। वही क़ुर्बत वाले हैं।

फ़-ला उक़्सिमु बि-मवाक़ि'इन्-नुजूम
75. तो मैं सितारों के ठिकानों की क़सम खाता हूँ।

इन्नहू ल-क़ुरआनुन करीम। फ़ी किताबिम्-मक्नून
77-78. बेशक ये एक बा-इज़्ज़त क़ुरआन है, एक महफ़ूज़ किताब में।

फ़-लौला इज़ा बलग़तिल्-हुल्क़ूम
83. फिर जब जान हलक़ तक पहुँच जाए।

वो वाक़िआ जो दुनिया उलट देता है

बेटा, क़ुरआन में कुछ लफ़्ज़ नाम नहीं बल्कि फ़ैसले होते हैं। **अल-वाक़ि'आ** का मतलब है 'वो जो पड़े, वो जो लाज़मी हो कर रहे' — वो वाक़िआ इतना यक़ीनी कि उसका उनवान बस यही है: **होने वाला।** और उसकी दूसरी आयत हर बहस को शुरू होने से पहले बंद कर देती है: '**लैस लि-वक़्'अतिहा काज़िबह**' — जब वो पड़े, तो कोई ज़ुबान ऐसी न होगी जो उसे झुठला सके। **उस दिन के बारे में बहसें सिर्फ़ इस तरफ़ होती हैं।**

फिर सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों का बयान आता है जिसमें उस दिन का पूरा इंक़िलाब है: '**ख़ाफ़िज़तुर्-राफ़ि'अह**' — वो पस्ती में गिराने वाला, और बुलंदी पर उठाने वाला। इस दुनिया की हर दर्जाबंदी एक ग़लीचे की तरह झाड़ी जाएगी: मुतकब्बिर अपनी ऊँची कुर्सियों से नीचे गिराए जाएँगे, और वो नज़र-अंदाज़ मोमिन — जिसका नाम किसी

फ़ेहरिस्त ने कभी न उठाया — उन बुलंदियों पर उठाया जाएगा जहाँ बादशाह भी न पहुँचे। **वो दिन, बेटा, तारीख़ की बड़ी तसहीह है।**

ज़मीन एक सख़्त झटके से हिलाई जाएगी, पहाड़ चूर चूर कर के — यहाँ तक कि वो धूल बन जाएँ, बिखरे हुए — '**हबा-अम्-मुम्बस्सा**', हवा में तैरते ज़र्रे। **जिन्हें हम 'दाइमी' कहते हैं वो धूप की किरन में धूल की तरह हवा में लटक जाएँगे।**

इंसानियत तीन हो जाती है

'और तुम **अज़्वाजन सलासह** — तीन क़िस्म हो जाओगे।' बेटा, उन ख़ानों को गिनो जिनमें दुनिया लोगों को बाँटती है: क़ौमियतें, ज़ातें, तबक़े, पासपोर्ट, फ़ॉलोअर-काउंट्स — सैकड़ों डिब्बे। **उस दिन, अल्लाह की छाँटने वाली मशीन बिल्कुल तीन क़तारें निकालती है**, और हर इंसान जो कभी जिया एक में खड़ा होता है:

दाएँ वाले — अस्हाबुल-मैमनह — और दाएँ वाले क्या ही (ख़ुश-नसीब) हैं! **बाएँ वाले** — अस्हाबुल-मश्अमह — और बाएँ वाले क्या ही (बद-नसीब) हैं! और एक तीसरा गिरोह इज़्ज़त के नग़ारे के साथ ज़िक्र किया गया: '**वस्-साबिक़ूनस्-साबिक़ून**' — और आगे बढ़ने वाले, आगे बढ़ने वाले ही! '**यही मुक़र्रबून हैं** — क़ुर्बत में लाए गए।'

यहाँ से पूरी सूरह, बेटा, इन तीन मुस्तक़बिलों का रहनुमाई-शुदा दौरा है — **अल्लाह हमें मंज़िलें पूरी तफ़सील से दिखाते हुए जब कि हमारे पाँव अभी भी रास्ता चुन सकते हैं।**

आगे बढ़ने वाले — आख़िरत का फ़र्स्ट क्लास

साबिक़ून कौन हैं? वो जो **पहले दौड़े** — ईमान लाने में पहले जब ईमान क़ीमती था, नमाज़ की तरफ़ पहले, फिसलने के बाद तौबा में पहले, देने में पहले, माफ़ करने में पहले। उनका अज्र उनकी जल्दी की ख़ुशबू लिए हुए है: नेमत के बाग़, सोने और जवाहरात से बुने तख़्तों पर, आमने-सामने टिकाए हुए — **कोई रश्क बाक़ी नहीं जो लोगों को पीठ-ब-पीठ बिठाए।**

उनके इर्द-गिर्द हमेशा जवान ख़िदमत-गुज़ार एक **बहते** चश्मे से प्याले लिए घूमते हैं — और उस मशरूब पर दो इलाही हाशिये ग़ौर कीजिए, बेटा: '**ला युसद्दूऊन 'अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून**' — उस से न सर-दर्द, न अक़्ल का नुक़सान। **दुनिया की लज़्ज़तें हमेशा एक बिल भेजती हैं** — हैंगओवर, उस के बाद का ख़ाली-पन। **जन्नत की लज़्ज़त वाहिद लज़्ज़त है जिसके साथ कोई बिल नहीं।**

और उस जगह की सबसे नायाब ऐश: 'वो वहाँ कोई **लग़्व** — फ़ुज़ूल बात — नहीं सुनते न कोई गुनाह वाली बात। सिर्फ़ ये कहना: **सलाम, सलाम।**'

और इस हिस्से की एक आयत आपके सीने में दौड़ जगा दे: आगे बढ़ने वाले '**पहली** नस्लों में से एक **बड़ा** गिरोह, और **बाद** वालों में से **कुछ**।' **अगली सफ़ भर रही है, बेटा — मगर वो कभी बंद नहीं हुई।** हर नस्ल, आपकी भी, अपने साबिक़ून भेज सकती है।

दाएँ वाले

फिर दौरा दूसरी — वसीअ और फ़य्याज़ — मंज़िल में दाख़िल होता है: 'और दाएँ वाले — दाएँ वाले क्या ही (ख़ुश-नसीब) हैं!' उनका घर: **सिद्र** के दरख़्तों में जिनके हर काँटे निकाल दिए गए — दुनिया की बेरी चुभती है; **जन्नत की बेरी बिना काँटे की है, क्योंकि वहाँ किसी चीज़ को तकलीफ़ देने की इजाज़त नहीं।** केले के दरख़्त फलों से लदे; **साया** हमेशा फैला — कोई जलाती दोपहर नहीं; **पानी** मुसलसल बहता; और फल '**बकसरत** — न ख़त्म होने वाला, न रोका जाने वाला।'

इन दो लफ़्ज़ों पर ठहरिए, बेटा: '**ला मक़्तू'अह व ला ममनू'अह**।' दुनिया का हर फल या तो **बे-मौसम** (ख़त्म) होता है या **बजट से बाहर** (रोका हुआ)। **जन्नत दोनों पाबंदियाँ हमेशा के लिए मिटा देती है।**

और ऊँचे बिछौने, और वो साथी जिन्हें अल्लाह ने **नए सिरे** से बनाया — मोहब्बत-भरे और हम-उम्र — दाएँ वालों के लिए: 'पहली नस्लों में से एक **बड़ा** गिरोह, **और** बाद वालों में से एक **बड़ा** गिरोह।' **दायाँ हाथ वसीअ है,

अलहम्दुलिल्लाह** — जगह है, इतनी जगह। मगर ग़ौर कीजिए, बेटा, सूरह ने साबिक़ून का बाब **पहले** रखा: **निशाना आगे रखो, और दायाँ तुम्हारा सेफ़्टी नेट हो — इसका उल्टा नहीं।**

बाएँ वाले — और उनकी चार आदतें

और फिर दौरा तीसरी मंज़िल में दाख़िल होता है, बेटा, और ज़ुबान बदल जाती है: 'और बाएँ वाले — बाएँ वाले क्या ही (बद-नसीब)! **फ़ी समूमिंव्-व हमीम** — झुलसाती लू में और खौलते पानी में — **व ज़िल्लिम्-मिंय्-यह्मूम** — और काले धुएँ के साये में — **ला बारिदिंव्-व ला करीम** — न ठंडा, न कोई इज़्ज़त वाला।'

उस तंज़ को महसूस कीजिए: उन्हें एक **साया** दिया गया — और वो धुएँ का है, जो न ठंडक देता है न इज़्ज़त। दुनिया में उन्होंने झूटे सायों पर भरोसा किया; वहाँ उन्हें वही मिला।

और फिर अल्लाह उनकी **चार आदतें** गिनवाते हैं — बेटा, इन्हें एक चेकलिस्ट की तरह पढ़िए:

एक: '**इन्नहुम कानू क़ब्ल ज़ालिक मुत्रफ़ीन**' — वो इस से पहले **ऐश में डूबे** हुए थे। 'मुत्रफ़' वो शख़्स है जिसे आराम ने नरम कर दिया, जिसकी हर ख़्वाहिश फ़ौरन पूरी होती रही, यहाँ तक कि उसे किसी चीज़ की क़ीमत का एहसास ही न रहा।

दो: '**व कानू युसिर्रून 'अलल्-हिन्सिल्-'अज़ीम**' — और वो एक **बड़े गुनाह पर अड़े** रहते थे — मुफ़स्सिरीन कहते हैं इस से मुराद शिर्क है, और हर वो गुनाह जिस पर आदमी बिना तौबा के जमा रहे। **मसला फिसलना नहीं था; मसला अड़े रहना था।**

तीन और चार: 'और वो कहा करते थे: क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे — क्या हम वाक़ई उठाए जाएँगे? और क्या हमारे पहले बाप-दादा भी?'

और उनका खाना: '**ज़क़्क़ूम** के दरख़्त से खाओगे, उस से पेट भरोगे, और उस पर

खौलता पानी पियोगे — **फ़-शारिबून शुर्बल्-हीम** — प्यासे ऊँटों की तरह पियोगे।' बेटा, ऊँट प्यास में इतना पीता है कि कभी मर जाता है — और वो पानी उनकी प्यास कभी नहीं बुझाएगा।

तीन चैलेंज जो आप हर रोज़ हारते हैं

और अब, बेटा, सूरह वो करती है जो क़ुरआन बहुत कम करता है: वो आपको **तीन सीधे सवाल** देती है, आपकी अपनी रोज़ाना ज़िंदगी से, और हर एक का जवाब एक ही है।

पहला — बीज: '**अ फ़-र-अयतुम मा तहुसून** — भला बताओ वो बीज जो तुम बोते हो — **अ अन्तुम तज़्र'ऊनहू अम नह्नुज़्-ज़ारि'ऊन** — क्या **तुम** उसे उगाते हो, या **हम** उगाने वाले हैं?' बेटा, किसान बीज ज़मीन में डालता है — बस। जो उसके बाद ज़मीन के अँधेरे में होता है, उस पर किसी इंसान का कोई इख़्तियार नहीं। और फिर तंबीह: '**लौ नशा-उ ल-ज'अल्नाहु हुताम** — अगर हम चाहें तो उसे चूरा कर दें, और तुम हैरान रह जाओ: **इन्ना ल-मुग़्रमून** — हम पर तो तावान पड़ गया — **बल नह्नु महरूमून** — बल्कि हम महरूम कर दिए गए!'

दूसरा — पानी: '**अ फ़-र-अयतुमुल्-मा-अल्-लज़ी तश्रबून** — भला बताओ वो पानी जो तुम पीते हो — क्या **तुमने** उसे बादल से उतारा, या **हम** उतारने वाले हैं? अगर हम चाहें तो उसे **खारा** कर दें — तो तुम शुक्र क्यों नहीं करते?' एक ही लफ़्ज़, बेटा — 'उजाजन' — और दुनिया के सारे मीठे पानी बे-कार हो जाएँ।

तीसरा — आग: '**अ फ़-र-अयतुमुन्-नारल्-लती तूरून** — भला बताओ वो आग जो तुम सुलगाते हो — क्या तुमने उसका दरख़्त बनाया, या हम बनाने वाले हैं? **नह्नु ज'अल्नाहा तज़्किरतंव्-व मता'अल्-लिल्-मुक़्वीन** — हमने उसे एक **याद-दिहानी** बनाया और मुसाफ़िरों के लिए फ़ायदा।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: आग को **'तज़्किरह'** कहा गया — एक याद-दिहानी। हर बार जब आप चूल्हा जलाएँ, वो छोटी लौ आपको उस बड़ी आग की याद दिलाने के लिए है।

और तीनों के बाद हुक्म: '**फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-'अज़ीम** — तो अपने रब-ए-अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए।' **खाना, पानी, आग — तीन चीज़ें जिनके बग़ैर इंसान एक दिन नहीं जी सकता, और तीनों में उसका हिस्सा सिर्फ़ इतना है कि वो उन्हें इस्तेमाल कर ले।**

वो किताब जिसे सिर्फ़ पाक छूते हैं

फिर एक अज़ीम क़सम आती है: '**फ़-ला उक़्सिमु बि-मवाक़ि'इन्-नुजूम** — तो मैं **सितारों के ठिकानों** की क़सम खाता हूँ — **व इन्नहू ल-क़समुल्-लौ त'अ्लमून 'अज़ीम** — और बेशक ये एक बहुत बड़ी क़सम है, अगर तुम जानो।'

बेटा, अल्लाह ख़ुद कह रहे हैं कि ये क़सम कितनी बड़ी है — सितारों के मक़ाम, उनके मदार, उनके तुलू और ग़ुरूब की जगहें, वो बे-इंतिहा फ़ासले और ठीक हिसाब जिनसे वो टँगे हुए हैं।

और ये सब किस लिए? '**इन्नहू ल-क़ुरआनुन करीम** — बेशक ये एक **बा-इज़्ज़त क़ुरआन** है — **फ़ी किताबिम्-मक्नून** — एक **महफ़ूज़, छुपाई हुई किताब** में — **ला यमस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून** — इसे सिर्फ़ **पाक** ही छूते हैं — **तन्ज़ीलुम्-मिर्-रब्बिल्-'आलमीन** — रब्बुल आलमीन की तरफ़ से उतारा हुआ।'

बेटा, उलमा ने 'मुतह्हरून' की दो तशरीहात कीं, और दोनों ख़ूबसूरत हैं: लौह-ए-महफ़ूज़ में उसे सिर्फ़ **पाक फ़रिश्ते** छूते हैं; और हमारे हाथों में, जुमहूर उलमा ने इसी से मुसहफ़ को बा-वुज़ू छूने का हुक्म निकाला।

और एक तीसरा, गहरा मानी भी है: **उसके मानी को सिर्फ़ पाक दिल छूते हैं।** एक गंदा दिल हुरूफ़ पढ़ लेगा और मतलब से महरूम रहेगा; एक साफ़ दिल एक आयत पर रो पड़ेगा। तो अपने हाथ धोइए, बेटा — और अपना सीना भी।

'**अ फ़-बि-हाज़ल्-हदीसि अन्तुम मुद्हिनून** — तो क्या तुम इस कलाम को हल्का समझते हो — **व तज्'अलून रिज़्क़कुम अन्नकुम तुकज़्ज़िबून** — और अपने

रिज़्क़ का हिस्सा यही बनाते हो कि झुठलाते रहो?'

जब जान हलक़ तक पहुँच जाए

और अब, बेटा, सूरह अपने आख़िरी और सबसे ताक़तवर मंज़र पर पहुँचती है — मौत का बिस्तर, और एक ऐसा चैलेंज जिसका जवाब आज तक किसी ने नहीं दिया:

'**फ़-लौला इज़ा बलग़तिल्-हुल्क़ूम** — तो जब जान **हलक़** तक पहुँच जाए — **व अन्तुम हीन-इज़िन तन्ज़ुरून** — और तुम उस वक़्त **देख** रहे होते हो — **व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन्कुम व लाकिल्-ला तुब्सिरून** — और **हम तुमसे ज़्यादा उसके क़रीब होते हैं**, मगर तुम देखते नहीं।'

उस कमरे का तसव्वुर कीजिए, बेटा। ख़ानदान बिस्तर के गिर्द जमा — बे-बस, सिर्फ़ देखते हुए। कोई डॉक्टर, कोई पैसा, कोई मोहब्बत उस रूह को एक सेकंड के लिए भी रोक नहीं सकती। **और उसी लम्हे, अल्लाह उस से बेटे और बीवी से भी ज़्यादा क़रीब हैं।**

और फिर वो चैलेंज: '**फ़-लौला इन कुन्तुम ग़ैर मदीनीन** — तो अगर तुम वाक़ई किसी के हिसाब में नहीं हो — **तर्जिऊनहा इन कुन्तुम सादिक़ीन** — तो **उसे वापस लौटा दो**, अगर तुम सच्चे हो!'

बेटा, ये पूरे क़ुरआन का सबसे ख़ामोश करने वाला जुमला है। तुम कहते हो कोई ख़ुदा नहीं, कोई हिसाब नहीं, सब कुछ इत्तिफ़ाक़ है? **ठीक है — वो रूह जो अभी हलक़ में है, अभी इस कमरे में है, उसे वापस भेज दो।** पूरी इंसानियत, अपनी सारी टेक्नोलॉजी के साथ, एक कमरे में खड़ी है और **एक साँस** वापस नहीं ला सकती।

और फिर सूरह उन तीन क़तारों पर लौटती है, जिनसे वो शुरू हुई थी — मगर अब मौत के बिस्तर पर: 'तो अगर वो **मुक़र्रबीन** में से है — तो उसके लिए **राहत**, और ख़ुशबू, और नेमत का बाग़। और अगर वो **दाएँ वालों** में से है — तो 'तुझ पर सलाम, दाएँ वालों की तरफ़ से'। और अगर वो **झुठलाने वाले, गुमराह** लोगों में से है — तो खौलते पानी की मेहमानी, और जहन्नम में जलना।'

'**इन्न हाज़ा ल-हुव हक़्क़ुल्-यक़ीन** — बेशक यही यक़ीनी हक़ है — **फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-'अज़ीम** — तो अपने रब-ए-अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए।'

बेटा, सूरह उसी हुक्म पर ख़त्म होती है जिस पर वो बीच में ठहरी थी — **सुब्हान रब्बियल-'अज़ीम।** और आप जानते हैं ये कहाँ कहा जाता है? **रुकू में**, हर नमाज़ में, दिन में कई बार। तो ये पूरी सूरह — तीन अंजाम, तीन चैलेंज, और मौत का बिस्तर — आपके हर रुकू में समेट दी गई है।

और आख़िर में एक बात, बेटा: नबी ﷺ ने फ़रमाया कि **सूरह हूद और उसकी बहनों ने उन्हें बूढ़ा कर दिया** — और मुफ़स्सिरीन ने अल-वाक़ि'आ को उन्हीं में गिना। और इब्ने मसऊद (रज़ि0) से मरवी है कि **जो हर रात सूरह अल-वाक़ि'आ पढ़े, उसे कभी फ़ाक़ा न पहुँचे।** मगर बेटा — इसे तावीज़ की तरह मत पढ़िए। इसे **इसी तरह** पढ़िए जैसे हमने आज पढ़ा: तीन क़तारें, और ये सवाल कि **मैं किस में खड़ा हूँ।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. वो दिन 'गिराने वाला, उठाने वाला' है — तारीख़ की बड़ी तसहीह; यहाँ की दर्जाबंदी वहाँ नहीं चलती।

2. दुनिया सैकड़ों ख़ानों में बाँटती है; वहाँ सिर्फ़ तीन क़तारें हैं — और आपके पाँव अभी चुन सकते हैं।

3. साबिक़ून बनने की कोशिश कीजिए — पहले ईमान, पहले तौबा, पहले देना, पहले माफ़ करना; दायाँ हाथ सेफ़्टी नेट हो, निशाना नहीं।

4. जन्नत की लज़्ज़त वाहिद लज़्ज़त है जिसका कोई बिल नहीं आता — 'न ख़त्म होने वाला, न रोका जाने वाला।'

5. बाएँ वालों की चार आदतों से बचिए: ऐश में डूबना, गुनाह पर **अड़े रहना**, हिसाब का इनकार, और आख़िरत का मज़ाक़।

6. बीज, पानी और आग — तीनों में आपका हिस्सा सिर्फ़ इस्तेमाल है; इसलिए जवाब

वही है: 'सुब्हान रब्बियल-'अज़ीम।'

7. उस लम्हे को याद रखिए जब जान हलक़ तक आएगी — और वो चैलेंज जिसका जवाब कोई नहीं दे सका: 'तो उसे वापस लौटा दो।'

या अल्लाह, हमें साबिक़ून में शामिल फ़रमाइए, हमारे दिलों को अपनी किताब छूने के लायक़ पाक कर दीजिए, और हमारा ख़ात्मा उन पर कीजिए जिनसे कहा जाएगा: तुझ पर सलाम। आमीन।